अपना बैलेन्स सीट ऐसा क्लीयर करो जो धर्मराज़ भी सलाम करके वतन में भेजे
(दादी जी का क्लास)

यह संगमयुग पुरुषोत्तम युग है इसे चढ़ती कला का, वरदानी युग भी कहते हैं। इस युग में आप सबको समर्पित होने का भाग्य मिला है। यह भाग्य भी कोटो में कोई, कोई में भी कोई को मिलता है। तो हमें आप समर्पित पाण्डवों को देख बहुत-बहुत खुशी हो रही है। हमारे दिल की आश है कि आप सब ऐसी भट्टी करो जो बाबा की आशायें पूरी हों। हम सबकी एक आश है कि हम बाबा को प्रत्यक्ष करें, यह आश अभी तक पूरी नहीं हो रही है, क्यों? हमारी आश है कि हमारे यज्ञ के जो सभी पाण्डव हैं, वह ऐसा करके दिखावें जो हरेक कहे कि मेरी स्थिति बाबा के ज्ञान और योग के अनुसार निर्विघ्न है अर्थात् हम बाबा आपके पक्के 'मायाजीत बच्चे' हैं। माया कमजोर करती है वह तो बहुत सुना है। लेकिन अभी हम मायाजीत हैं, ऐसा ठप्पा सभी का लगना चाहिए। ऐसी यहाँ भट्टी की प्रतिज्ञा का प्रत्यक्ष प्रमाण बाबा को मिलना चाहिए। पाण्डव माना ही जिन्होंने प्रीत बुद्धि का प्रत्यक्षफल दिखाया। भल उनके सामने कितनी भी परीक्षायें आई, जंगल में भी जाना पडा तो भी विजयी बनकर दिखाया। ऐसे आप पाण्डव इस पाँच दिन के अन्दर ऐसी एकता की नींव लगाकर जाओ जो आप यहाँ से जहाँ भी जाओ तो सब देखकर कहें कि यह जादू की नगरी से पूरा ही बदलकर आये हैं। जो कुछ भी छोटी-मोटी, तेरी-मेरी बातें हों ....सब खत्म करके हम बाबा के सच्चे बच्चे, सच्ची गोदी में बैठकर चलेंगे - ऐसी यहाँ भट्टी करके जाना। योग का अभ्यास तो करना ही हैं, साथ-साथ इस भट्टी में कुछ नवीनता करके जानी है।

जैसे बाबा कहते हैं कि सर्वंश त्यागी बनो, वैरागी बनो। समर्पित का अर्थ ही है सर्वंश त्यागी। समर्पित माना ही पुरानी दुनिया से वैरागी और पक्के सन्यासी, पक्के त्यागी, पक्के तपस्वी और सच्चे-सच्चे माला के मणके बनकर जायें। हम 'विजयी माला' के विजयी रत्न हैं, विजयी रत्न थे इसलिए अभी 'विजयी रत्न' बनके ही जाना है क्योंकि बार-बार दिल में यह जरूर आता कि अब घर जाना है या आप समझते हैं हम तो अभी युवा हैं, हमें तो अभी इस दुनिया में रहना है? युवा, बूढे सब समझते हैं हमें घर जाना है। कभी-कभी युवा समझते हैं हम तो अभी युवा हैं लेकिन बाबा कहते आप सब वानप्रस्थी हो, वानप्रस्थी माना युवा नहीं। वानप्रस्थियों की बुद्धि में रहता है कि कभी भी पंछी उड़ जाए, हम तैयार हैं।

तो हमारी आश है कि एक-एक पाण्डव ऐसा अपना बैलेन्स सीट क्लीयर करे -- जो धर्मराज भी फूलों से स्वागत करके, सलाम करके वतन में भेजे। सभी बाबा के ज्ञानी तू आत्मा बच्चे अपना बैलेन्स सीट ऐसा बनाओ जो धर्मराज दिल से खातिरी करे। यह नहीं कि देख तुमने यह गलती किया, यह तू भोग - तो यह सब यहाँ खत्म करके जाओ। क्या यह पॉसिबुल है? हमारा रिमार्क है कि अन्त में बाबा बांहें पसार कर कहे आओ बच्चे आओ, ऐसे गले लगाकर वतन में भेज दे, ऐसी स्थिति बनानी है। दिल कहे 100 प्रतिशत हमारा यह रिकार्ड हो। बाबा की श्रीमत अनुसार हमारा मन-वचन-कर्म हो। बाबा हमें सर्टीफिकेट दे कि यह संस्कारों से, संकल्पों से, दृष्टि, वृत्ति सभी से पास विद ऑनर है। ऐसी कमाल करो तब कहेंगे समर्पित। ऐसी कमाल नहीं किया तो समर्पित क्या हुआ!

****

संगमयुग पर एक-एक घडी सफल करके बुद्धि की स्वच्छ बनाओ

दादी प्रकाशमणी जी

दिन और घडियां बीतती जा रही हैं और हमें पता है कि सारे कल्प में संगमयुग बहुत वैल्युबुल है। इस संगमयुग में भगवान ने कितनी अच्छी शिक्षायें दी हैं; सच नहीं बोलते हो तो झूठ तो नहीं बोलो, अच्छा नहीं कर सकते हो तो बुरा तो नहीं करो, देवता नहीं बन सकते तो इन्सान तो बनो। बाबा कहते हैं इन आंखों से जो देख रहे हो वो कुछ रहने वाला नहीं है, जो बुद्धि में, धारणा में होगा वो ही साथ चलेगा। भगवान ने इतनी अच्छी समझ दी है जो सारे कल्प में काम आने वाली है। इस समझ को यूज़ करके मायाजीत बनना है। क्या शूद्र लाइफ थी, अभी बाबा ने कितनी ऊंची लाइफ बना दी है। यह समझ दी है कि ये नहीं करना है और यह करना है। क्यों करना है क्योंकि यह श्रेष्ठ पूज्य बनने का अन्तिम जन्म है। अभी बोलने की घडियाँ पूरी हुई, दर्शनीय मूर्त बनना है जो सेकेण्ड में कोई भी प्रसन्न हो जाये। भावना अनुसार किसी को भी आपका साक्षात्कार हो जायेगा लेकिन कराता तो भगवान ही है।

जो आत्मा, परमात्मा का सारा ज्ञान इस जन्म में हप कर ले, हम कहेंगे उन जैसा तो कोई नहीं है। महावीर और हनुमान जैसा कोई नहीं, इतना हल्का जो कितनी भी पहाड़ जैसी सेवा आये तो सेकेण्ड में उठा ले। इतना करके भी निरहंकारी रहता है क्योंकि करके बाप के सामने आ जाता है। ऐसे सेवाधारी ही संगम पर यादगार छोड़ते हैं। भक्ति में दर्शन भी उनका करते हैं, जो याद की यात्रा में अच्छी तरह से बैठते हैं। संगमयुग की एक-एक घडी सफल करके बुद्धि को ऐसा स्वच्छ बनाना है, जो कुछ भी किचडा रह न जाये। ब्राह्मण हैं स्वच्छ पवित्र तभी गोल्डन एज में जायेंगे। स्वच्छ बनने में मेहनत है। जिसको स्वच्छता से प्यार है, वो सदा स्वच्छ रहने के आदती बन जाते हैं। जिसको मन साफ रखने का अक्ल है वो कभी चिड़चिडेपन में नहीं आयेगा। संगमयुग पर बुद्धि की स्वच्छता का बहुत आधार है। राजाई पानी है तो बुद्धि से और प्रजा पद पाना है तो भी बुद्धि से। अब बुद्धि में और कुछ नहीं है लेकिन रचता और रचना का ज्ञान है जो और कोई के पास नहीं है। बाबा ने हम सबको डिटैच रहना सिखाया है। जिसको ये अक्ल आ गया वो सेकण्ड में पार हो जायेगा। यह बहुत अच्छी विधि है जो बात पूरी हुई वह और आगे न बढे। सुनने वा सोचने की कोई बात ही नहीं है क्योंकि समय कहाँ है। इसलिए बाबा कहते हैं यह सब जो कुछ देखते हो वो कुछ भी रहेगा नहीं। एक-एक दिन पास हो रहा है। कल क्या होने वाला है वो हम देखे लेंगे। जो हम सोचेंगे वो होगा ही नहीं क्योंकि होने वाला वही है जो फिट हुआ पडा है। जो कुछ होगा उसमें भी किसी का दोष नहीं है। किसका दोष सोच लिया तो मैंने फालतू सोच करके अपने पार्ट को खराब किया। ड्रामानुसार सब एक्यूरेट बना हुआ है।

हमें आर्डर मिला हुआ है, श्रीमत मिली हुई है। आर्डर, श्रीमत और डायरेक्शन। बाप का हमें आर्डर है कि टाइम थोडा है, तुम यहाँ से हिल नहीं सकते हो। बाप का हम बच्चों पर राइट हो कि बच्चे यह करना है, यह नहीं करना है। इसमें किसी का ज्यादा सोच नहीं चलता क्योंकि जिसको श्रीमत का पता है, उसमें ही कल्याण है। बहुत काल से अन्दर मन और बुद्धि ने मान लिया है कि इसमें ही कल्याण है तो और कोई बात सुनें ही नहीं। किसकी ताकत नहीं जो अपनी मत दे सके। सदा नशा रहे कि हमको सिखाने वाला कौन है। बाबा को इस मुख के लिए भी रिगार्ड है। शरीर में आत्मा है और तन बाबा को दिया है। कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाला वो है, जो उसके डायरेक्शन से कर रहा है। अगर अपनी इच्छा व ममता के वश कुछ किया तो अच्छा नहीं माना जायेगा। दूसरे के स्वभाव वश मेरा मूड खराब हो गया। स्वभाव उसका और मूड मेरी खराब हो गई माना बाप को भूल गये। इसलिए बाबा कहते हैं यह हमेशा ध्यान रखो कि यह अन्तिम जन्म की अन्तिम घडिया हैं, मेरे से कराने वाला कौन है। मन भी सोचे कि मेरे मन को सिखाने वाला कौन है, बुद्धि को क्या सोचना है, वो सिखाने वाला कौन है। तो बुद्धि में जो समझ है और बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसी अनुसार सोचेंगे। जैसा देखा, सुना वैसा तो नहीं सोचेंगे, उसको अपनी शुभ भावना और शुभ कामना से ही रेस्पान्स करना है। बाबा का डायरेक्शन है कि जो देखो

वा सुनो उसको शुभ भावना और शुभ कामना से रेसपान्स करो। ज्यादा नहीं सोचो क्योंकि सोच में अपना एड हो जाता है। शुभ भावना और शुभ कामना रखना - यह हमें डायरेक्शन है। तभी हम बुद्धि को उसी आर्डर पर चलाने से राज्य पद पायेंगे। उसके पहले बाबा कहते हैं तुम सम्पन्न रहो तो माया ऊपर नहीं आ सकेगी। माया मरने के बाद भी आक्सीजन पर है। कभी मोह वश उसको छुट्टी दे देते हैं। अन्दर से हो कि माया का मेरे पास कोई काम नहीं है। बाबा ने हमको इतना बिजी कर दिया है तो उसके लिए कोई बहाना नहीं है।

ज्ञान कहता है कि तुम बाप को याद करो, तुम मर्यादा पर चलो, तुम नियम अनुसार स्टडी करो, अपना समय बरबाद मत करो और अच्छे संग में रहकर समय सफला करो। स्वचिन्तन में रह बाप को याद करो तो मायाजीत बनेंगे। इससे माया सामने आ नहीं सकेगी, आयेगी तो वार नहीं कर सकेगी क्योंकि ईश्वर का संग हमको बचा देता है। इसमें अलबेलापन, सुस्ती और बहाना बहुत-बहुत खराब है। अनुभव करो जितनी याद है उतनी शक्ति है। जिस घडी और बातें अन्दर चली जाती है तो शक्ति तन, मन और धन से खत्म होती है। अपनी लाइफ में हम फालतू कर्म क्यों करें जो दूसरों के सामने आना पडे। इसलिए बुद्धि को अच्छा प्यार से चलाने की सेवा करो तो समय सफल होगा। भगवान को यहाँ भोले भाले बच्चे चाहिए। बुद्धि में जो भरेंगे वो ही साथ जायेगा क्योंकि हम बुद्धि से पूज्य से पुजारी बन रहे हैं।

निर्मल बनो, निर्माण बनो

बापदादा सभी बच्चों को विशेष श्रीमत दे रहे हैं - बच्चे बोल में निर्मान बनो। निर्माणता ही महानता है। झुकना नहीं है वास्तव में परमात्मा को भी अपने ऊपर झुकाना है। यही दुआयें प्राप्त करने का साधन है।

इस वर्ष को विशेष निर्माण, निर्मल वर्ष के रूप में मनाओ। मुख से ऐसे बोल बोलो जो सब कहें और भी हमको सुनाओ। मुख से हीरे मोती निकलें। अभिमान के बोल बोलकर किसी को भी दुःख नहीं दो।

अपने स्वभाव को निर्मल (शीतल शुद्ध) बना दो तो हर कार्य में सफलता मिलती रहेगी। अभी निर्मल स्वभाव के ऊपर विशेष अण्डरलाइन करो। कुछ भी हो जाए लेकिन अपना स्वभाव सदा निर्मल रहे। 'निर्मल स्वभाव' अर्थात् बिल्कुल शीतल, शुद्ध। शीतलता के कारण ही शीतला देवी का गायन है।

कोई भी बात जोश दिलाने वाली हो लेकिन आप निर्मल रहो। परिवर्तन शक्ति के आधार पर सेकण्ड में बिन्दी लगा दो, अन्दर हलचल न हो तब कहेंगे निर्मल और निर्माण। इसलिए बापदादा कहते हैं मोल्ड होने वाला ही रीयल गोल्ड है।

जिन बच्चों का स्वभाव निर्मल हैं। वह विचार देने लेने में सहज होंगे, किसी भी सेवा में विघ्न रूप नहीं बनेंगे। उन्हें यह संकल्प भी नहीं आयेगा कि मेरा विचार, मेरा प्लैन, मेरी सेवा इतनी अच्छी होते हुए भी मेरा क्यों नहीं माना गया... यह मेरापन आना भी अलाय मिक्स होना है।

यदि निश्चय रूपी फाउण्डेशन पक्का है तो सहज योगी, निर्मल स्वभाव, शुभ भावना की वृत्ति और आत्मिक दृष्टि वाले होंगे। चलन और चेहरे से हर समय सरलता की झलक अनुभव होती रहेगी।

जो बच्चे सदा निर्मल और निर्माण स्वभाव वाले हैं उनके मन-बुद्धि में व्यर्थ की गति फास्ट नहीं होगी। वे निर्मल और निर्मान होने के कारण सभी को प्रसन्नचित्त की छाया में शीतलता देंगे। कैसा भी आग समान जलता हुआ, बहुत गरम दिमाग का हो लेकिन प्रसन्नचित्त के वायब्रेशन की छाया उसे शीतल बना देगी।

आप पूर्वज और पूज्य आत्माओं के यादगार में भी नयन सदा निर्मल दिखाते हैं। कभी भी अभिमान या अपमान के नयन नहीं दिखाते। कोई भी देवी वा देवता के नयन निर्मल वा रुहानी होंगे। तो जब कभी किसी के प्रति कोई ऐसा निगेटिव संकल्प आये तो याद रखो कि मैं कौन हूँ! मेरे जड़-चित्र भी रुहानी नैनधारी हैं तो मैं तो चैतन्य हूँ?

जो नम्रचित, निर्मल स्वभाव वाले हैं, उन्हें कभी भी स्व की सफलता का अभिमान नहीं होगा। वर्णन नहीं करेंगे, अपने गीत नहीं गायेंगे। दूसरे उनके गीत गायेंगे लेकिन वह स्वयं सदा बाप के गुण गायेंगे। इसलिए कोई कैसा भी हो आप दिल से स्नेह दो, शुभ भावना दो, रहम करो।

निर्माणचित आत्मायें कारण वा समस्या को पॉजिटिव समाधान बनायेंगी। उनके चेहरे पर कभी कमजोरी का, कोमलता का चिन्ह नहीं होगा। इसलिए निर्माण बनो, कोमल नहीं। कोमल उसे कहते हैं जो पानी का फल हो। ऐसे नहीं पानी डालो और बह जाये वा मुरझा जाए।

निर्मान बनना ही स्वमान है और यही सर्व द्वारा मान प्राप्त करने का सहज साधन है। निर्मान बनना झुकना नहीं है लेकिन सर्व को अपनी विशेषता और प्यार में झुकाना है।

महानता की निशानी है निर्माणता। जितना निर्माण उतना सबके दिल में महान् स्वतः ही बनेंगे। बिना निर्माणता के सर्व के मास्टर सुखदाता बन नहीं सकते। निर्माणता निरहंकारी सहज बनाती है। निर्माणता का बीज महानता का फल स्वतः प्राप्त कराता है।

जैसे वृक्ष के लिये कहते हैं जितना भरपूर होगा उतना झुका हुआ होगा तो जैसे वृक्ष का झुकना सेवा करता है। ऐसे ही निर्माण आत्मायें सबको सुख देने की सेवा करेंगी। जहाँ भी जायेंगी, जो भी करेंगी वह सुखदायी होगा। जितना स्वमान उतना निर्मान। ऐसे नहीं -- हम तो ऊंच बन गये, दूसरे छोटे हैं या उनके प्रति घृणा भाव हो, यह नहीं होना चाहिए।

शुभ-भावना, शुभ-कामना का बीज ही है - निमित्त-भाव और निर्मान-भाव। हद का मान नहीं, लेकिन निर्मान। कभी भी सभ्यता को छोड़ करके सत्यता को सिद्ध नहीं करना। सभ्यता की निशानी है निर्माणता। यह निर्मानता निर्माण का कार्य सहज करती है। जब तक निर्मान नहीं बने तब तक निर्माण नहीं कर सकते।

हर आत्मा के प्रति कल्याण वा रहम की भावना का स्वभाव, हर एक को ऊंचा उठाने का स्वभाव, मधुरता का स्वभाव, निर्माणता का स्वभाव धारण करो। यह स्वभाव आपको सदा हल्का रखेगा। कोई भी बोझ अनुभव नहीं होगा।

जो निर्माण होते हैं उनमें रोब नहीं होता है, रूहानियत की झलक होती है। जैसे बाप कितना नम्रचित बनकर आते हैं, स्वयं को वर्ल्ड सर्वेन्ट कहकर बच्चों को अपने से भी आगे रखते हैं, ऐसे फालो फादर। अगर जरा भी सेवा में रोब आता है तो वह सेवा समाप्त हो जाती है।

"सेवा में सफलता का आधार - निश्चय और अनुभव" दादी जी का क्लास

अनुभवों के आधार पर हर बात में सफलता समाई हुई है। पहली बात हम खुद से पूछें कि मेरा बाबा पर और सारी नॉलेज पर पूरा-पूरा पक्का निश्चय है? निश्चय बुद्धि विजयन्ति। अगर बाबा में पूरा निश्चय है तो बाप हमें जो नई-नई नॉलेज दे रहा है, जिसे कभी कहाँ सुना नहीं। जो आत्मा के 84 जन्मों की नॉलेज है, या परमात्मा ज्योति बिन्दु है, सर्वव्यापी नहीं है, यह नॉलेज है। चाहे ड्रामा 5000 वर्ष का है, यह कल्प-कल्प फिरता है, चाहे हमारी धारणायें जो हैं वह बिल्कुल नई हैं। तो खुद से पूछना है कि हर प्वाँइन्ट में हर प्रकार से बाप और नॉलेज में मेरा फेथ है? या उसी निश्चय में कभी-कभी कोई-न-कोई संकल्प, जिसको संशय कहो, वह उठता है? या मुझे बाबा पर 100 परसेन्ट निश्चय है और उसी निश्चय से हर कदम में विजयी हैं क्योंकि सबसे पहले निश्चय है कि बाबा सत्य है, सत्य बाबा जो सुनाता है, वह सब सत्य है। तो अगर बाप में हमारा निश्चय है, तो हर सेकेण्ड, हर कदम में जो श्रीमत है, उसी श्रीमत पर चलते हैं? फल स्वरूप हर कदम के पीछे सफलता का अनुभव होता है? कदम-कदम में कमाई है। तो श्रीमत पर बरोबर ऐसा अनुभव रहता कि हर कदम आगे बढ़ते सहज ही विजयी बनते जा रहे हैं। तो यह भी हुई सफलता। तो सफलता का आधार, हमारा हर कदम श्रीमत पर हो। श्रीमत अनुभव कराती है कि हमारे हर कदम के पीछे पदम समाया हुआ है। इसलिए बाबा के इशारे अनुसार कदम-कदम पर सौभाग्यशाली अथवा पदमापदम भाग्यशाली हैं। हम श्रीमत में अपनी हद की मनमत न मिलावें, सदा श्रीमत को बुद्धि में धारण करें, तो सामने बाबा रहेगा।

तीसरा - सफलता का आधार है -- त्याग क्योंकि त्याग जिसके बुद्धि में रहता है, उसे त्याग के रिटर्न में 100 गुणा भाग्य मिलता है। त्याग के लिये बाबा का पहला-पहला डायरेक्शन है -- कि देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को त्याग अर्थात् भूल मामेकम् याद करो। तो त्याग में देह-अभिमान भी आता, सम्बन्ध भी आते, इच्छायें भी आती। तो जहाँ सब इच्छायें त्याग हो जाती वहाँ सफलता जरूर होती है। त्याग माना इच्छा मात्रम् अविद्या। इच्छा का अर्थ ही है अज्ञान। इच्छायें 100 प्रकार की हैं, उन सब इच्छाओं का त्याग चाहिए। यह भी इच्छा है कि मेरे सेन्टर की सेवा बहुत अच्छी हो तो हम सबको बतायें वाह मेरा सेन्टर... यह भी इच्छा है। अपनी सेवाओं के लिए बहुत इच्छा करते और वही इच्छा रखकर सेवा करते। आप कहेंगे यह इच्छा थोडेही है, यह तो उमंग होता। लेकिन उमंग अलग चीज़ है, इच्छा अलग चीज़ है। यह बहुत सूक्ष्म है इसलिए मिक्स हो जाता है। इच्छा में अहम् पैदा होता। इच्छा में देह-अभिमान आता, मैं और मेरा आता। तो यह जो बाबा कहते यह सेवायें तुम्हारी नहीं हैं, यह तो बाबा करन-करावनहार कराता, वह भूल जाता। मैंने आज बहुत अच्छा भाषण किया, सबको बहुत अच्छा लगा, यह भी इच्छा है। यह भी जो सूक्ष्म आता कि हम इनसे भी आगे जाके दिखाऊं, इसमें भी आगे जाऊंगी, यह करूँगी, यह करूँगी, यह है गी, गी, गी... देह-अभिमान। जैसे बाबा कहते तुम भाषण करने बैठे तो बाबा को याद करो, बाबा आपेही बुलवायेगा। परन्तु मैं आज यह करूँगी, ऐसा ऐसा बोलूंगी... यह जो "मैं" "मैं" आती, वह है इच्छा। परन्तु बाबा याद किया, बाबा मेरे साथ है, मैं निमित्त हूँ,..। निमित्त समझकर चलना यही सफलता का आधार है।

अगर इच्छा नहीं होगी तो सदैव अनुभव होगा कि बाबा की मेरे सिर पर बहुत ब्लैसिंग हैं। तो कोई इसमें बाबा की ब्लैसिंग समझकर चलते, कोई बाबा की ब्लैसिंग को नहीं मानते। परन्तु अगर लाइन क्लीयर है तो बाबा की एक के बदले 100 गुणा ब्लैसिंग मिलती। बाबा को हम मानते हैं, वह हमारा वरदाता है, वरदानों से हमें आगे उडाता है। तो हम वरदानी हैं, ऐसा खुद में निश्चय हो जाये। इच्छा वाले को रहता कि मेरा शो हो, इसने बहुत अच्छा किया, यह किया, वह किया... यह है इच्छा। परन्तु कहा जाता तुम निमित्त हो, इसलिए निष्कामी

बन सेवा करो। तो बाबा तुम्हें विशेष सफलता देगा। इच्छा वाला कभी ना उम्मींद हो जायेगा और कभी कोई सफलता मिली तो उम्मींद में आयेगा। तो उसका बैलेंस नहीं रहता। परन्तु बाबा का वरदान है "हे उम्मीदों के सितारे!" हे पदमापदम भाग्यशाली! सौभाग्यशाली बच्चे!.. यह सब हमारे लिए वरदान हैं।

तो सफलता के लिए पहले हम त्यागी बनें। फिर दूसरा हमारी पढाई है तपस्वी बनो। तो त्यागी फिर हो तपस्वी। तपस्या ही हमारे इस ज्ञान का आधार है क्योंकि हम योगी हैं, तपस्वी हैं। हम योगी और तपस्वियों के बीच जरा अंश-मात्र भी माया नहीं होनी चाहिए। कहते हैं कि तपस्वी जब तपस्या करते हैं तो असुर आ करके विघ्न डालते हैं। यहाँ फिर व्यर्थ संकल्प विकल्प तपस्या में बहुत सामना करते हैं। परन्तु अगर हम एक बाबा की याद में ऐसा लवलीन रहें जो व्यर्थ संकल्प बिल्कुल स्टॉप हो जाएं। व्यर्थ संकल्प जीत बनना ही हमारी तपस्या है, इससे हमारी संकल्प शक्ति बहुत-बहुत पॉवरफुल बनती है, फिर अशरीरी बनना सहज हो जाता है।

तो पहले है त्याग, फिर तपस्या और फिर आती है सेवा। लेकिन सेवा मेरी है या सेवा बेहद बाबा की है? मैं सेवा करती या बाबा जो श्रीमत देता, आज्ञा करता मैं उस अनुसार सेवा करती? "मैं पन" आता तो यह हुई हद की सेवा, परन्तु यह बाबा की सेवा हैं, हम निमित्त हैं तो वह है बेहद की सेवा। इसको कहा जाता है त्यागी, तपस्वी और सेवाधारी। दूसरा - बाबा कहते नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। तो चेक करें कि हम हर प्रकार से सूक्ष्म नष्टोमोहा हैं? नष्टोमोहा बनने का आधार है - बाबा को सामने देखो। हमें ऐसा बाप समान बनना है। तो हरेक खुद से पूछे कि हम कहाँ तक बाप समान बने हैं? हमारा पुरुषार्थ ही है, बाप समान सम्पन्न बनना। तो कहा जाता जो बाप समान बनते और बाबा को ही सामने रख चलते, उनकी सब इच्छायें स्वत: पूरी हो जाती हैं। उनकी प्रकृति हर तरह दासी होती। तो सरेन्डर माना नो इच्छा। न कोई बुद्धि में इच्छा है, न कोई व्यवहार कार्य की इच्छा है। सरेण्डर माना जो बाबा खिलावे, जो बाबा पहनावे, जहाँ बाबा रखे, उसमें ही मेरी सफलता है।

तीसरा - बाबा हमेशा कहते हैं, बच्चे मालिक बन तुम राय दो और बालक बन स्वीकार करो। तो हम बालक, मालिक हैं - इसका भी पूरा बैलेन्स चाहिए। इसलिए मालिक बन राय दिया फिर बालक बन गये। नहीं तो आता कि मेरी तो राय मंजूर नहीं हुई, यह क्या हुआ, आगे तो मैं राय ही नहीं दूँगी, यह है इच्छा अथवा सूक्ष्म-अभिमान।

तो यह सब प्रैक्टिकल अनुभव होने चाहिए। आप सबको बाबा ने चोटी से खींचकर अपना बनाया है, अब सिर्फ देही-अभिमानी होकर रहना है, यही पद का आधार है। जिन्हों को भी थोडा देह-अभिमान आया, मैं ऐसा हूँ वैसा हूँ...ऐसे देह-अभिमान वाले ठहर नहीं सकेंगे। इसलिए सदा ही थैंक्स बाबा! शुक्रिया बाबा! वाह बाबा! वाह बाबा! का गीत गाओ। चाहे जो भी कुछ सफलता होती, बाबा के पास में हमारा रिकॉर्ड है। अगर आप कहते मैंने इनको ज्ञान दिया, यह देखो कितना अच्छा है। तो बाबा कहते नहीं, तुमने क्या ज्ञान दिया, मैंने उसकी बुद्धि को टच करके तेरे पास भेजा है। सुखदाता, सबके प्यार का दाता बाबा है।

तो सफलता का आधार है - एक बाबा से सर्व सम्बन्धों का प्यार। बाबा के प्यार में लीन रहो तो बाकी सब समस्या समाप्त। कहा जाता मेरे रग-रग, नस-नस में हर मिनट-घडी में, बाबा-बाबा, मीठा बाबा...बसता। इसी में रहो तो कभी उदास नहीं होंगे। हाँ, कभी-कभी बाबा पेपर लेता, आप 10 गुणा मेहनत करेंगे, टाइम भी देंगे रिजल्ट एक गुणा मिलेगी, यह पेपर होता है। तो इसको बाबा कहते तुमने सूक्ष्म इच्छा रखके यह सब काम किया। कहा जाता तुम एक कदम आगे आओ तो बाबा 100 कदम आगे आयेगा। नहीं तो बाबा भी क्यों आये। तो इसमें बाबा पेपर भी लेता कि देखें कितना नाउम्मींद हुआ। इसलिए यह सब हमारी अवस्था को बढाने के लिये कई प्रकार के पेपर्स आते लेकिन हमें फुल पास होना है। अगर आज एक गुणा सफलता नहीं मिली लेकिन तुम राइट हो तो कल दस गुणा सफलता अवश्य मिलेगी। तो सफलता का आधार है - आप पूरा ही सरेण्डर रहो। बाबा कहता है जितना-जितना तुम मुझे याद करेंगे उतना-उतना तुम्हें सफलता मिलेगी। तो

सफलता में भी निश्चय चाहिए। सफलता में त्याग, तपस्या भी चाहिए और इतना ही सूक्ष्म अपनी धारणा चाहिए क्योंकि अब बाबा चाहते हैं कि मेरे बच्चे सभी सम्पन्न बनें। अच्छा - ओम् शान्ति।

सब बुराईयों को निकाल फरिश्ते समान सूक्ष्म, शुद्ध और हल्के बनो

दादी प्रकाशमणी जी

जब हम भक्ति करते थे तब माया का पता नहीं था। माया क्या होती है, उसका पता बाबा का बनने से होता है। इच्छा और ममता भी शत्रु हैं। इच्छा पूरी नहीं होगी तो क्रोध आता रहेगा, असन्तुष्टी होगी। दूसरा - मनुष्य भगवान में या देवताओं में आशायें रखते हैं और जब वो पूरी होती हैं तो भावना रखते हैं। उसमें कोई गुस्सा नहीं होता है परन्तु पूरी नहीं होने पर भावनायें कम हो सकती हैं। तो हमारे अन्दर अन्दर से इच्छाओं की अविद्या हो। सच की पढाई है, सच्चे बाप ने पढाया है और सच्चा बनना है। अब बाबा कहते हैं कि बालक वो जो सपूत बने, सपूत माना सच्चे। उस पर बाप राजी रहता है। वो अपने वर्से का हक ले लेते हैं, मांगते नहीं हैं, बाप दे देता है। सच्चा बना तो बाप का प्यारा बना, ईमानदार बना तो सबका प्यारा बना। जैसे हमारी सरस्वती माँ, सच्चा होकर श्रीमत को पालन करने में नम्बरवन बनी। जो बाबा ने इशारा दिया वो हुआ ही पडा है, बाबा को कभी दुबारा नहीं कहना पडा होगा कि मम्मा यह होना चाहिए। जो यज्ञ की सिस्टम बाबा ने मम्मा द्वारा बनाई है वही अभी तक चल रही है। पढाई से राजधानी स्थापन हो रही है। पढाई पर ध्यान है तो धारणा अच्छी होगी। जो धारणा में एक बारी भूल हुई वो दुबारा हो नहीं सकती। अन्दर रियलाइजेशन ऐसा होती है कि जो राईट है वो ही करना है, जो ठीक नहीं है उसको एवाइड करना है। और जो आवश्यक है उसको मिस नहीं करना है। बाबा ने कहा है कि यह भी एक वरदान हो जाता है जो तुम्हारे से मिस न हो। भल कितनी भी ड्फ्यूटी हो लेकिन योग और पढाई मिस न हो। अगर सच्ची लगन है तो कभी मिस भी नहीं होगा। ऐसे कई बाबा के बच्चे हैं जो कितनी भी बडी बात हो जाए, क्लास में जरूर आयेंगे क्योंकि नियम के पक्के हैं, उनको बाबा का वर्सा याद रहता है। पढाई के समय उनको सुस्ती और अलबेलापन नहीं आयेगा। इससे अन्त मति बडी मदद मिलती है क्योंकि उन्हें अन्त और भविष्य का ख्याल है।

कोई भी कमी है, देवताओं की भेंट में अच्छी बात नहीं है। बाबा कहते सतयुगी देवताओं के गुणों को इमर्ज करो। अशुद्धि और व्यर्थ से इनोसेन्ट हैं। आजकल के बच्चे इनोसेन्ट नहीं हैं, नहीं तो कहा जाता है बच्चा ब्रह्मा ज्ञानी समान है। हम तो ईश्वरीय सन्तान हैं, भविष्य देवता बनने वाली आत्मा हैं। अभी सब बुराई निकल गई और हम शुद्ध आत्मा बन गई तो फरिश्ते समान सूक्ष्म, शुद्ध और महीन बुद्धि बन जायें। इसके लिए पहले ज्ञान का सिमरण चले माना वो ज्ञान की बातें रिवाइज़ करो। फिर उसी का चिन्तन चले, गहराई में जाओ तो चिन्ता चली जाये। किसी भी प्रकार की चिन्ता न रहे। चिन्ता चिन्तन को खत्म करेगा, सिमरण व्यर्थ को खत्म करेगा। ज्ञान का सिमरण इतना अच्छा है जो व्यर्थ आता नहीं है। इतना सच्चा पुरुषार्थ हो जो कोई व्यर्थ की जरूरत न हो। किसको समझाने के लिए कोई व्यर्थ की जरूरत नहीं है, वो ईश्वरीय स्नेह से ही समझ जायेगा। हमको तो कभी नाउम्मींद नहीं होना है। व्यर्थ, उम्मींद रखने में विघ्न डालता है। जहाँ उम्मींद है वहाँ धीरज, प्रेम, शान्ति और सफलता है। सभी बाबा के बच्चे पुरुषार्थी हैं तो सदा बडे प्यार से उम्मींदें रखनी हैं। हम कुछ करेंगे तो करने की शक्ति भी बाबा देता है। बाबा उम्मींदें रखते हैं फिर हम हिम्मत रखते हैं तो बाबा मदद देते हैं फिर हम सच्ची दिल से करते हैं तो वो राजी रहता है और सब कुछ करता है। तो कोई भी कमी कमजोरियों को निकाल बलवान बनना है। कोई भी मायावी बातें सुनो ही मत क्योंकि माया की बातें कान में आने से हम औरों को सुनाते हैं, इसलिए वो बातें नहीं बोलो जो पश्चाताप करना पडे। जो बातें काम की नहीं हैं वो आँखों से देखो ही नहीं तो यह हमारी आँखे दर्शनीय मूर्त बन जायेंगी। अभी हमें बाबा की उम्मींदों का सितारा बनना है।

"वृत्ति से वायब्रेशन शुद्ध और शक्तिशाली बनाना है तो परदर्शन बन्द करो"

दादी जी का क्लास

ओम् शान्ति। जिसको सवेरे खुशी की खुराक खानी हो तो ओम् शान्ति बोले। ओम् शान्ति के महान मंत्र ने बहुत मदद की है। बाबा के चरित्र और बोल दोनों शक्तिशाली बनाने वाले हैं। मम्मा में सबके विकारों की बलि लेने की शक्ति है। जैसे काली माँ के आगे जायें और विकार खत्म हो जायें, मम्मा में इतनी शक्ति है। याद से विकर्म विनाश हो जायें इसके लिए इतनी पावरफुल याद चाहिए। कोई भी बात सामने आये तो सुनी अनसुनी हो जाये। सुनना पाप है तो सुनाना भी पाप है। देखना भी पाप, बोलना भी पाप -- इतना अटेन्शन दें तब विकर्म विनाश हों। अभी तो कोई पाप न चढे, इसमें खबरदार रहने वाले अपने मात-पिता को फालो करेंगे। हमारी माँ एक तरफ काली फिर शीतला भी है। जो सारे विकारों की बलि लेने वाली फिर शान्त शीतल बनाने वाली है, जिससे हम पक्के वैष्णव कुल में आने वाले बन जायें। वैष्णव माना कोई भी बात में, मान-अपमान का कोई छींटा न पडे। वैष्णव, अगर शराब का छींटा भी पडा तो स्नान कर लेंगे। मांस तो देखेंगे भी नहीं। उस गली से भी पास नहीं करेंगे। भक्ति में भी मानते हैं कि मांस खाने वाले, बेचने वाले, खरीदने वाले, पकाने वाले सब पर पाप चढ़ता है।

महान पुण्य आत्मायें अच्छी तरह से ध्यान देते हैं कि विकर्मों का विनाश करना है। भविष्य के लिए श्रेष्ठ पुण्य कर्म करना है। अभी पूरा अटेन्शन देना है, कोई बहाना नहीं। कोई अच्छा कर्म करने के लिए अगर बहाना भी बनाया तो अपनी तकदीर गंवाई। ईर्ष्या, द्वेष के कारण भी बहाना होता है। कुछ न कुछ मन में होगा तो अच्छा कर्म करने नहीं देगा। अच्छा माना ऊंच श्रेष्ठ, सच्चाई-सफाई से कर्म करने से संस्कार बनते हैं। संस्कार से कर्म होते हैं, कर्म से संस्कार बनते हैं। तो कोई भी पुराने संस्कार हमारे में न हों, अंश मात्र भी न हो क्योंकि बहुत अच्छा तरीका हमको पता है। कर्म करें तो बाप को फालों करें, याद करें तो शिवबाबा को करें। शिवबाबा को याद करने से पुराने विकर्म विनाश होंगे। नये अच्छे कर्म होंगे ब्रह्मा बाबा को याद करने से। तो और कोई कर्म हम क्यों करें, दूसरे के कर्म क्यों देखें! हरेक के कर्म की जिम्मेवारी उसके ऊपर है। उसको मदद भी नहीं कर सकते हैं। किसको समझा भी नहीं सकते हैं। समझ में ही नहीं आयेगा क्योंकि उसको रियलाइजेशन ही नहीं है। वो राइट समझकर कर रहे हैं। श्रेष्ठ कर्म करने वाले की रियलाइजेशन पावर बहुत अच्छी होती है।

इस पर मीठी मम्मा की एक बात, मम्मा के सामने दो आत्मायें थी। एक गुणवान थी और दूसरी सबकी नज़रों में इतनी गुणवान नहीं थी। पर मम्मा ने उसकी महिमा ज्यादा की। तो मम्मा ने कहा ये अपने को अच्छा समझकर बैठी है, लेकिन ये अच्छा बनने का पुरुषार्थ कर रही है। तो ज्यादा अच्छी कौन? उसमें महसूसता शक्ति है, इसमें महसूसता शक्ति नहीं है। अच्छा गुणवान बनना है तो महसूस करने की, अपने आप को समझने की, जानने की जिसके पास बुद्धि है उसके ऊपर मात-पिता टीचर सतगुरु की कृपा दृष्टि है, परिवार की भी है। उनको कोई इशारा मिलेगा तो प्यार से स्वीकार कर लेंगे। सत्यता वाला कभी जिद नहीं करेगा, सदा सभ्यता से, मुस्करा के रियलाइजेशन से बात करेगा। कभी उसके मुख पर नहीं आयेगा कि मेरी गलती नहीं है। अपनी गलती को छिपाना, दूसरे की बताना मेरे ख्याल में पाप माना जाता है। अपनी गलती बताने पर भी कहेगा कि वो गलत है। सयाना सच्चा कहेगा कुछ भी हो मेरी गलती ये है। आइने में अपने आपको देख लिया ना।

आइना ही है जिसमें हम अपने को देख सकते हैं। किसी को देखकर अपने को नहीं देख सकते हैं। इसलिए अपने को देखने के लिए अन्तर्मुखता जरूरी है। बाह्यमुखता के द्वारा औरों को देख समझ लेते हैं कि मैं ये ही हूँ। अगर मैं दूसरों को बाह्यमुखता से देखेंगी तो उनको भी बाह्यमुखता ही दिखाई पडेगी। अपनी रियलाइजेशन ही अपने को स्वच्छ बनाती है। फिर सत्य ज्ञान की शक्ति काम करती है। सच्चे बाबा के साथ सम्बन्ध, बाबा मेरा कैसा है, ऐसा बनने में आसान हो जाता है। दिन रात अपने को देखना, कौन देखेगा, जिसको पुण्य आत्मा बनना होगा, छोटे-छोटे पापों से भी मुक्त होना होगा।

वृत्ति और वायुमण्डल, हरेक अपने दिल में स्पष्ट करे। अन्दर मेरे दिल में जैसी बात है वैसी दृष्टि है और वैसे ही ख्याल होंगे। जैसा ख्याल है वैसी बात दिल में बैठती है फिर वो भावना बन जाती है। दिल की है भावना, मन की है वृत्ति। भावना और संकल्प दोनों मिल गये। दिल में भावना शुद्ध है, चाहे अशुद्ध है। कामेशु क्रोधेशु, काम है तो क्रोध भी है। काम कामना को भी कहा जाता है। कामना पूरी नहीं होगी तो क्रोध होगा। इसलिए बाबा ने कहा है निष्काम सेवा। कामना रखकर सेवा नहीं करो, उसका फल आपेही निकलेगा। किसी ने महिमा नहीं की तो गुस्सा आयेगा। फिर ओम् शान्ति कहना भी मुश्किल हो जाता है। वो अगर अपने आप को आइने में देखे तो बस बेडा पार हो जाय। बाबा कहता उस टाइम उसको आइना देना चाहिए। रुहानियत, स्नेह, सच्चाई से, अच्छी तरह से साक्षी होकर देखें। परमात्मा स्मृति दिलाता है कि तुम आत्मा मेरी सन्तान हो, अगर ये बात समझ में आती है तो रुहानियत आयेगी क्योंकि आत्मा ने 84 जन्म लिये हैं, सतयुग से कलियुग तक कितने जन्म लेते हुए कहाँ गिरे हैं। पहले पुजारी हैं फिर हैं विकारी। अभी क्या बन रहे हैं वो तो देखें ना! बाबा कहता हे आत्मा ये तो देखो न कि मैं बन क्या रहा हूँ! आत्मा तो पावन बने, पर शरीर की कर्मेन्द्रियां भी कर्म करके पावन बन जायें। आत्मा ज्ञान योग से पावन बनेगी, शरीर कर्म करने से पावन बनेगा।

भक्ति मार्ग में, मन्दिरों में देवतायें अभी भी दृष्टि द्वारा सेवा कर रहे हैं। विश्व भर की आत्माओं की सेवा है। इसमें रुहानियत, स्नेह और सच्चाई चाहिए। हरेक अपने आप से पूछे कि मुझ आत्मा में जो भगवान भर रहा है, वो है? दिल से पूछो। मन दिल के द्वारा बतायेगा कैसे तुम्हारे विचार चलते हैं। दिल है दर्पण। दिल में पता चलता है और कोई इच्छा नहीं है। इच्छा है एक, बाबा सम्पन्न बनाने के लिए सामने बिठा करके शिक्षा दे रहा है, ये शिक्षा का स्वरूप बन जाऊं। शिक्षा बाबा की हमारे स्वरूप में हो। आज अगर ऐसा बन जायेंगे तो नये आने वाले बच्चों को बाबा कहेगा कि ये जैसे हैं वैसे तुम भी बन जाओ।

सयाने, सच्चे, समझदार देखेंगे भी तो किसको! जिनका पुरुषार्थ ऊंचा होगा, उसको देखकर खुद भी दौडी पहनेंगे। जिसका पुरुषार्थ खुद ही ढीला है, उसको देखकर खुद भी ढीला हो जोयगा, विचारधारा ही बदल जाती है। जैसे किसी बीमार को, दुःखी को देखूँ तो उसका इन्फेक्शन मुझे भी हो जायेगा। फट से उसको हॉस्पिटल में ले गई तो अपने को भी सम्भाला और उसे डाक्टर को दे दिया। किसी को दुःखी देखकर दुःखी थोडेही होना है, उसे डाक्टर के पास पहुँचाओ। आज बाबा ने ध्यान खिंचवाया है - बच्चे आपकी वृत्ति से वायुमण्डल शुद्ध बन जाये, बाबा की याद से, स्नेह से, शुद्ध भावना से वायुमण्डल अच्छा बन जाये।

लोग मृत्यु पर बहुत रोते हैं, भले कितना ज्ञानी हो, शक्ल भी ऐसी होगी तो क्या सर्विस करेगा। इतना बहादुर हो जो सब शान्त हो जायें। यह सर्वोत्तम सेवा है, कोई भी वायुमण्डल का मेरे पर असर न हो। बाबा हमको क्या से क्या बनाता है। दूर बैठे भी हमको बाबा के वायब्रेशन बहुत आये हैं, जिसका फल अब देख रहे हैं। फिर आता है मुझ आत्मा को क्या करने का है? क्या सोचना है? क्या दिल में रखना है? ये सदा ही अपने दिल से पूछो। सच्ची दिल पर साहेब राजी है। फिर बाबा खुद ही हमको कहेगा कि ये बच्ची अन्दर बाहर साफ है। कभी कोई कहे नहीं कि ये अन्दर में एक बाहर में दूसरी है। दिखाना कुछ और करना कुछ और, इसमें बाबा को कुछ नहीं फर्क पडेगा, अपनी तकदीर में फर्क पडेगा। किसी को न देख, खुद को अलौकिक दिव्य दर्शनीय

मूर्त बनना है। मेरे में कोई साधारणता न हो, दिव्यता हो, अलौकिकता हो। हमारा जन्म ही अलौकिक है। ब्राह्मण हैं, देवता बनने वाले हैं, वहाँ जाकर पुरुषार्थ नहीं करेंगे। ब्राह्मण लाइफ है, अभी देवता बनने के संस्कार भरने हैं। अभी सच्चे वैष्णव बनना है। साक्षी होकर देखो तो अपनी दिल और मन बताता है कि संकल्प किस प्रकार का है। दिल भी बता सकती है क्योंकि दर्पण है। अपने को देख पर-दर्शन बन्द कर। इसलिए बाबा कहता स्वदर्शन चक्रधारी बनो। जिसको वृत्ति से वायुमण्डल शुद्ध बनाना है वो पहले पर-दर्शन बन्द करे।

अगर मेरे मन में कोई बात होगी तो मेरी वृत्ति कैसी होगी! उस वृत्ति से मैं अपने को कौन सी पालना दे रही हूँ। जिस तरह से मेरे मात-पिता मेरी पालना कर रहे हैं, उस पालना में नहीं रही हूँ, पढाई में भी नहीं हूँ। अगर पढाई मेरे दिमाग में अच्छी तरह से नहीं बैठ रही है तो पद मेरा कम हो रहा है, ये बात दिमाग से दिल में बैठे तो रुहानियत आये, खुशी आये। नहीं तो छोटी-छोटी बातों का असर होता रहेगा। ताकत नहीं है तभी असर हुआ, धारणा की शक्ति नहीं है तो असर हुआ। असर हुआ फिर मिटाने में मेहनत है। एवर हैपी नहीं होंगे। एवर हैपी और हेल्दी बनने पर ध्यान नहीं रखा है तो वायुमण्डल का असर हो जायेगा। मुझे तो अच्छे वायब्रेशन बाबा से बहुत मिल रहे हैं, वो कैच नहीं कर सकते हो क्या! दिलवाला बाबा के पास बैठी हूँ, तो दिल में फिर क्या है! ये याद नहीं है कि दिलवाला मेरा बाप बैठा है। एक सेकण्ड में दिल की बात जान जाता है। जो मेरे कल्याण की बात होगी वो अपने आप हो जायेगी। हम कहेंगे ये होना चाहिए तो कभी नहीं होगा। अच्छी स्थिति बनाने का है तो बाबा मदद करता है। फालतू कामना रखेंगे तो मदद नहीं करता है। अपनी घोट तो नशा चढे। स्वदर्शन चक्रधारी बन, तू सच्ची दिल वाली बन, जो भी बात है सुना दे बस। रांग है राईट है, ये बाबा को थोडेही चाहिए। बाबा से बहुत बातें करने की जरूरत ही नहीं है, सुनता भी नहीं है। शान्ति से बाबा व्यर्थ बन्द कर देता है। व्यर्थ सोचने वाले बाबा के पास भी व्यर्थ बातें करते हैं। कोई भी बात है बाबा के सामने रख दो बस। बाबा के सामने नहीं रखते हो तो बढ़ती जाती हैं, तब औरों से बात करते हैं। औरों से नहीं करते हैं तो मन में दबा के रख देते हैं। आगे बाबा हमको शिक्षा देता था कि कोई बात सुनाये तो कभी नहीं सुनना क्योंकि उसको पता नहीं है कि उल्टी भी कहाँ की जाती है। अगर अन्दर में रखेंगे तो ज्ञान अन्दर जायेगा ही नहीं। बढिया भोजन हो और अन्दर कुछ अटका हुआ हो, तो अन्दर जायेगा ही नहीं। उल्टी करें भी तो कहाँ करें जो हल्का हो जाये। सच्चा सयाना न दिमाग भारी करता है, न दिल भारी करता है।

ये कोई लाइफ नहीं है, कारण कुछ भी बतायें। सब कारण वास्तव में कुछ हैं ही नहीं। कारण सब बनाये हैं, हैं नहीं। कोई समझू सयाना होगा तो कारण नहीं बतायेगा। कुछ भी है हमारी टेस्ट के लिए है। क्या गर्मी को कहेंगे कि क्यूँ आई हो? आई है तो अपने को सम्भाल। उसका टाइम है, वो तो आयेगी। उसको गुस्सा करेंगे तो वो और ही हैरान करेगी। कोई बात आती है तुम्हारा टेस्ट करने के लिए। कोई विरली आत्मा है जिसने किसी को दोषी नहीं बनाया होगा, मम्मा बाबा को फालो कर पास किया है। पढाई है ही पेपर। एक दिन पढाई शुरु करो, दूसरे दिन पेपर शुरु हो जाता है। फिर पुरानी बातें याद आती है, मुरली याद करनी पड़ती है, बाकी बातें याद आती हैं। अभी हमको वृत्ति से वायुमण्डल अच्छा बनाना है, तो अपने आपको सारा दिन सम्भालना है क्योंकि वैल्युबुल शरीर है, वैल्युबुल टाइम है, वैल्युबुल नॉलेज है और संग, संगठन भी वैल्युबुल है। कोई भी बात बुद्धि में टच न करे, स्पर्श भी न करे इतना सेफ रहना है तब तो पूज्यनीय मूर्ति बनेंगे। पूजा करानी नहीं है, पर पूज्य बनने की भावना तो अपने लिए रखूँ। पूज्यनीय बनाने वाले को सामने रखूँ। वो तो बना ही रहा है, कल्प पहले भी बनाया था, अभी भी बना देगा। अपनी मनोवृत्ति से, बाप से मिली हुई दृष्टि से वायुमण्डल बहुत पावरफुल बन जायेगा। फिर वायब्रेशन विश्व में पहुचेंगे। एक ही समय पर वृत्ति-दृष्टि शुद्ध-शान्त, वायुमण्डल ऊंचा तो वायब्रेशन हजारों माइल तक जा सकते हैं। फिर उनको आयेगा कि मधुबन के वायब्रेशन पहुँच रहे हैं। यह रिहर्सल हम सबको अभी ही करनी है। अच्छा - ओम् शान्ति।